संपादकीय

बंगाल में कानूनी व्यवस्था की हो बहाली

छिटपुट हिंसा की घटनाओं के बावजूद पश्चिम बंगाल में कमोबेश शांतिपूर्ण मतदान हुआ था। लेकिन चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद हो रही हिंसा की घटनाएं परेशान करने वाली हैं। भाजपा व टीएमसी के कुछ समर्थकों में हिंसक झड़पों के अलावा राज्य में पार्टी के अगुवा रहे सुवेंदु अधिकारी के करीबी चंद्रनाथ रथ की हत्या चौंकाने वाली है। इससे दोनों दलों के बीच तनाव बढ़ा है। राज्य में मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार सुवेंदु अधिकारी का दावा है कि रथ की हत्या उनके करीबी होने के कारण की गई है। वहीं चंद्रनाथ के परिजनों का आरोप है कि यह हत्या ममता बनर्जी की भवानीपुर में अधिकारी से हुई हार का बदला लेने के लिये की गई है। उल्लेखनीय है कि इस दौरान कुछ भाजपा व टीएमसी कार्यकर्ताओं की भी हत्या की गई है। दरअसल, पंद्रह साल से सत्ता में काबिज रही टीएमसी पर भाजपा की बड़ी जीत ने दोनों पार्टियों के बीच तनाव को बढ़ाया है। यही वजह है कि भारतीय चुनाव आयोग पर हमलावर होते हुए ममता बनर्जी ने केवल चुनाव परिणामों को ही खारिज नहीं किया, बल्कि मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा देने तक से मना कर दिया। उनकी इस घोषणा ने लंबे समय से जारी टकराव को बढ़ाने का काम ही किया। इस घटनाक्रम से टीएमसी कार्यकर्ताओं को आ ामक होने का मौका मिला। निश्चय ही यह स्थिति राज्य के हित में नहीं कही जा सकती। राज्य में कानून व्यवस्था को प्राथमिकता के आधार पर बहाल किए जाने की जरूरत है। कायदे में चुनाव परिणाम सामने आने के बाद ममता को सदाशयता का परिचय देते हुए कार्यकर्ताओं से शांत रहने की अपील राज्य हित में करनी चाहिए। यही लोकतंत्र का तकाजा भी है। वहीं दूसरी ओर, भाजपा को भी अपने कार्यकर्ताओं को शांत रहने के लिये प्रेरित करना चाहिए। उन्हें चुनाव परिणाम सामने आने के बाद हिंसा से परहेज करना चाहिए। यही लोकतंत्र की प्रतिष्ठा भी है। यह विडंबना ही है कि चुनाव आयोग द्वारा राज्य के अधिकारियों को विजय जुलूसों पर प्रतिबंध लगाने के निर्देश देने के बाद भी दोनों दलों के कार्यकर्ताओं के बीच हिंसक झड़पें हुई हैं। ऐसी स्थिति में राज्य पुलिस को हिंसा के प्रति जीरो टॉलरेंस दिखाते हुए, केंद्रीय बलों के साथ कानून व्यवस्था बहाल करने के लिये मिलकर काम करना चाहिए। यूं तो पूरे राज्य में ही, अन्यथा खासकर संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ायी जानी चाहिए। हिंसक वारदातों व तोड़फोड़ में शामिल लोगों की पहचान करके उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। किसी भी राजनीतिक दल से संबद्धता की परवाह किए बिना उपद्रवियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना वक्त की जरूरत है। भाजपा व टीएमसी को अपने कार्यकर्ताओं से संयम बरतने को कहना चाहिए। वास्तव में अतीत में हिंसा का लंबा इतिहास रखने वाले पश्चिम बंगाल को अब नये सिरे से शुरुआत करके विकास के पथ पर लौटना चाहिए। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी हिंसा की कीमत आखिर आम जनता को ही चुकानी पड़ती है। यदि पश्चिम बंगाल के राजनीतिक इतिहास पर नजर डालें तो पाते हैं।

विनोद शर्मा, संपादक

विधानसभा चुनाव परिणाम

स्पष्ट जनादेश, नई सरकारों की होगी कड़ी अग्निपरीक्षा

> एक बार द्रमुक और एक बार अन्नाद्रमुक का मिथक टूट गया है। फिल्म स्टार विजय की झोली वोटों से भरी है। केरलम में पराजय के बाद देश भर से वामपंथी सरकारों का अंत हो चुका है तथापि वह अपना राजनैतिक और वैचारिक अस्तित्व बचाए रखने के लिए दो विधायकों के बल पर तमिलनाडु में एक्टर थलपति विजय की नई सरकार मे घुस रही है। सभी राज्य विधानसभाओं में भाजपा का खाता खुल चुका है। पहली बार केरलम में भाजपा के तीन व तमिलनाडु में एक विधायक जीतने में सफल रहे हैं। तमिलनाडु में थलपति विजय की सरकार- तमिलनाडु की जनता द्रविड़ राजनीति से हताश और निराश हो चुकी थी। कभी द्रमुक और कभी अन्ना द्रमुक राज्य इनके बीच में झूलता रहता था।

मृत्युंजय दीक्षित

तमिलनाडु में एक्टर थलपति विजय की इतनी प्रचंड लहर चली कि मुख्यमंत्री स्टालिन अपनी सीट तक हार गए। इस लहर का आभास किसी भी राजनैतिक विश्लेषक को नही था। एक्टर थलपति विजय की विजय में मुख्य भूमिका उनके चुनावी वायदों ने की है जो अधिकांशतः मुफ्त की रेवड़ी वाले हैं। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम आ चुके हैं। नई सरकारों के गठन की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु और पुदुचेरी के ये विधानसभा चुनाव परिणाम कई स्पष्ट संकेत देने वाले हैं। बंगाल, असम, और पुदुचेरी ने जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले भाजपा व राजग गठबंध को दो तिहाई बहुमत के साथ चुना वहीं तमिलनाडु और केरल में भी सत्ता बदल गई। बंगाल, असम और पुदुचेरी में विकास, कल्याणकारी योजनाओं व हिंदुत्व का कमाल रहा। असम में कल्याणकारी योजनाओं के सहारे भाजपा जहां महिलाओं और युवाओं को साधने में सफल रही वहीं मुख्यंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ मुहिम छेड़कर नस्ल, क्षेत्र और भाषा में बनते हिंदुओं को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई। असम और बंगाल की जनता को भाजपा यह भरोसा दिलाने में सफल रही कि केवल भाजपा ही बांग्लादेशी घुसपैठ की समस्या से मुक्ति दिला सकती है। बंगाल और असम के बाद सबसे अधिक चर्चा तमिलनाडु को लेकर हो रही है। तमिलनाडु के चुनाव परिणामों ने सभी को हैरान कर दिया है। एक बार द्रमुक और एक बार अन्नाद्रमुक का मिथक टूट गया है। फिल्म स्टार विजय की झोली वोटों से भरी है। केरलम में पराजय के बाद देश भर से वामपंथी सरकारों का अंत हो चुका है तथापि वह अपना राजनैतिक और वैचारिक अस्तित्व बचाए रखने के लिए दो विधायकों के बल पर तमिलनाडु में एक्टर थलपति विजय की नई सरकार मे घुस रही है। सभी राज्य विधानसभाओं में भाजपा का खाता खुल चुका है। पहली बार केरलम में भाजपा के तीन व तमिलनाडु में एक विधायक जीतने में सफल रहे हैं। तमिलनाडु में थलपति विजय की सरकार- तमिलनाडु की जनता द्रविड़ राजनीति से हताश और निराश हो चुकी थी। कभी द्रमुक और कभी अन्ना द्रमुक राज्य इनके बीच में झूलता रहता था। तमिल राजनीति में फिल्मी कलाकारों की अहम भूमिका रही है एम. जी. रामचंद्रन से लेकर करुणानिधि और जयललिता जैसे सितारों ने वहां की राजनीति में अहम भूमिका निभाई और लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे। तमिलनाडु में एक्टर थलपति विजय की इतनी प्रचंड लहर चली कि मुख्यमंत्री स्टालिन अपनी सीट तक हार गए। इस लहर का आभास किसी भी राजनैतिक विश्लेषक को नही था। एक्टर थलपति विजय की विजय में मुख्य भूमिका उनके चुनावी वायदों ने की है जो अधिकांशतः मुफ्त की रेवड़ी वाले हैं। विवाह के लिए महिलाओं को 22 कैरेट का आठ ग्राम सोना देने से लेकर 60 सल से कम आयु की महिलाओं को 2500 रुपए मासिक सहायता प्रति परिवार छह फ्री सिलेंडर देने का वादा काम कर गया। गरीब दुल्हनों के लिए रेशमी साड़ी और महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के लिए पांच लाख रुपए तक के बयाज मुक्त ऋण का आश्वासन भी विजय ने दिया है। थलपति विजय ने वैसे ही कई लोक लुभावन वायदे किये है जैसे कभी आप नेता अरविंद केजरीवाल किया करते थे। यह थलपति विजय तमिलनाडु के केजरीवाल सिद्ध हो सकते हैं। ईसाई पिता ओर हिंदू मां की संतान विजय ने अपनी पार्टी की विचारधारा तैयार करने में द्रविड़ विचारधारा और तमिल राष्ट्रवाद के तत्वों को जोड़ा है। इनकी पार्टी तमिलगा वेटी कझागम की स्थापना फरवरी 2024 में हुई, जो तमिलनाडु और पुदुचेरी तक फैली हुई है। लोग सोच रहे हैं कि विजय की आखिर इतनी बड़ी विजय कैसे हो गई? विजय लम्बे समय से कई घरों के चूल्हों के ईंधन, बेटियों की पढ़ाई ओर बहनों की शादी का खर्च लगातार उठा रहे थे। उनके वोटबैक में सबसे बड़ी हिस्सेदारी महिलाओं और युवाओं की रही है। वह अपनी फिल्मों में गरीबों के मसीहा के तौर पर पेश किए जाते थे जिसका परिणाम अब सबके सामने है। विजय की चुनावी जनसभाओं में अभूवपूर्व भीड़ उमड़ रही थी किंतु कोई राजनैतिक विश्लेषक यह मानकर नहीं चल रहा था कि वह सरकार बनाने तक पहुंच जाएंगे। तमिलनाडु में यदि कोई सबसे बड़ा परजीवी दल साबित हुआ है तो वह कांग्रेस है क्य उसने हर बार की तरह अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए एक और क्षेत्रीय दल की सरकार में गठबंधन के बहाने सेंधमारी कर ली है। जो दल कांग्रेस के साथ गए व कांग्रेस जिन दलों के साथ गई उन दलों का क्या हाल हो रहा है सभी को पता है। वैसे अभी थलपति विजय का शपथ ग्रहण समारोह भी ग्रहण ग्रस्त लग रहा है।

इंडी में बिखराव का खतराः विपक्ष के लिए आत्ममंथन का समय

ललित गर्ग

भारतीय लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष दोनों की अपनी-अपनी अनिवार्य भूमिकाएं हैं। जहां सत्ता नीतियों का निर्माण और क्रियान्वयन करती है, वहीं विपक्ष उन नीतियों की समीक्षा, संतुलन और वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। लेकिन जब विपक्ष स्वयं ही असंगठित, दिशाहीन और अंतर्विरोधों से ग्रस्त हो जाए, तब लोकतांत्रिक संतुलन भी प्रभावित होता है। हाल के पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु सहित अन्य राज्यों के चुनाव परिणामों ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि विपक्षी एकता का दावा करने वाला गठबंधन अपने भीतर ही गंभीर संकट से गुजर रहा है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस की पराजय और तमिलनाडु में द्रमुक की स्थिति ने विपक्षी खेमे को झकझोरने का काम किया है। यह केवल चुनावी हार नहीं है, बल्कि रणनीतिक विफलता का भी संकेत है और यह प्रश्न भी खड़ा करता है कि क्या विपक्ष केवल भाजपा-विरोध के आधार पर टिक सकता है या उसे एक ठोस वैचारिक और नीतिगत आधार की भी आवश्यकता है। भारतीय लोकतंत्र की सुदृढ़ता केवल सत्तापक्ष की नीतियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि एक सजग, विवेकशील और रचनात्मक विपक्ष पर भी उतनी ही आधारित होती है। विपक्ष का मूल दायित्व केवल आलोचना करना नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करना, नीतियों की खामियों को तथ्यों के आधार पर उजागर करना और जनहित के मुद्दों को प्रभावी ढंग से संसद एवं समाज के समक्ष रखना है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में विपक्ष सरकार का विरोधी नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संतुलन का संरक्षक होता है। उसे विकास कार्यों में सहयोग करते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शासन पारदर्शी, जवाबदेह और जनोन्मुखी बना रहे। दुर्भाग्यवश, पिछले दो दशकों में विपक्ष का एक बड़ा वर्ग इस रचनात्मक भूमिका से भटकता दिखाई दिया है, जहां नीतिगत बहसों की जगह व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप और राजनीतिक शोर-शराबा अधिक प्रमुख हो गया है। इंडिया गठबंधन का गठन एक बड़े राजनीतिक उद्देश्य के साथ हुआ था-भाजपा के वर्चस्व को चुनौती देना। प्रारंभिक स्तर पर यह प्रयास कुछ हद तक सफल भी दिखाई दिया, जब इस गठबंधन ने भाजपा को पूर्ण बहुमत से दूर रखने में भूमिका निभाई, लेकिन समय के साथ यह स्पष्ट होता गया कि यह गठबंधन वैचारिक एकता से अधिक राजनीतिक अवसरवाद पर आधारित है। गठबंधन की सबसे बड़ी कमजोरी उसका आंतरिक समन्वय है, जहां विभिन्न दलों के अपने-अपने क्षेत्रीय हित, नेतृत्व की महत्वाकांक्षाएं और अलग-अलग राजनीतिक एजेंडे अक्सर एक-दूसरे से टकराते हैं। सीट बंटवारे से लेकर नेतृत्व के प्रश्न तक, हर स्तर पर मतभेद सामने आते रहे हैं, जिससे यह स्थिति बनती है कि केवल एक साझा विरोध के आधार पर गठबंधन को स्थायी नहीं बनाया जा सकता। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और शिवसेना (यूबीटी) की नेता प्रियंका चतुर्वेदी जैसे प्रमुख चेहरों के बीच जिस तरह की बयानबाजी सामने आई है, वह गठबंधन की आंतरिक स्थिति को और अधिक उजागर करती है।

सार्वजनिक मंचों पर एक-दूसरे की आलोचना करना न केवल राजनीतिक परिपक्वता की कमी को दर्शाता है, बल्कि कार्यकर्ताओं और मतदाताओं के बीच भी भ्रम की स्थिति पैदा करता है। राजनीति में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन उन्हें व्यक्त करने का तरीका और मंच भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि जब गठबंधन के नेता ही एक-दूसरे के खिलाफ बयान देने लगें, तो यह संदेश जाता है कि गठबंधन केवल नाम का है और वास्तविकता में वह बिखराव की ओर बढ़ रहा है। महिला आरक्षण विधेयक पर विपक्ष का रुख भी उसकी रणनीतिक कमजोरी को उजागर करता है। यह विधेयक भारतीय समाज की आधी आबादी से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय था, लेकिन इसका विरोध जिस रूप में सामने आया, उसने विपक्ष की स्थिति को कमजोर किया। विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन उसका स्वरूप रचनात्मक होना चाहिए था। यदि विपक्ष इस विधेयक में सुधार के सुझाव देता, उसके क्रियान्वयन की समय-सीमा और प्रक्रिया पर सवाल उठाता, तो वह अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बन सकता था, लेकिन सीधे विरोध में खड़ा होना, वह भी बिना स्पष्ट जनसंदेश के यह दर्शाता है कि विपक्ष मुद्दों को समझने और उन्हें सही तरीके से प्रस्तुत करने में चूक कर रहा है। इसका प्रभाव विशेष रूप से महिला मतदाताओं पर पड़ा, जिन्होंने इसे अपने अधिकारों के विस्तार के रूप में देखा और इसी का राजनीतिक लाभ भाजपा ने अपनी रणनीति के माध्यम से उठाया।

जनगणना 2027 घर-घर पहुंच रही जनगणना टीम, नागरिक दें सही जानकारी

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

मुख्य जनगणना अधिकारी श्रीमती प्रियंका रजावत के मार्गदर्शन में जनगणना 2027 हेतु खंडवा शहर के 6 जोनों में कुल 307 ब्लॉकों के लिए 307 प्रगणकों एवं 51 पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की गई है। इनके अतिरिक्त लगभग 10 प्रतिशत कार्मिक रिजर्व श्रेणी में रखे गए हैं। समस्त प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण 9 बैचों में पूर्ण कराया जा चुका है। चार्ज अधिकारियों के नेतृत्व में जनगणना दल क्षेत्रवार घर-घर पहुंचकर सर्वेक्षण कार्य कर रहा है। जनगणना कार्य के दौरान नागरिकों से भवन, मकान, परिवार, पेयजल, शौचालय, बिजली, रसोई ईंधन, डिजिटल सुविधाएं, वाहन, सामाजिक वर्ग सहित निर्धारित 34 बिंदुओं पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा रही है। यह जानकारी शासन द्वारा विकास योजनाओं, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार, संसाधन प्रबंधन एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रभावी संचालन हेतु महत्वपूर्ण होगी। नागरिकों से अपील की गई है कि जनगणना दल द्वारा पूछे जाने वाले सभी प्रश्नों का सही, स्पष्ट एवं पूर्ण उत्तर प्रदान करें। सटीक जानकारी देना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व है, जिससे जनगणना के आंकड़े प्रमाणिक बनें और भविष्य की योजनाएं अधिक प्रभावी रूप से लागू की जा सकें। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जनगणना राष्ट्रीय महत्व का कार्य है, जो शहर एवं नागरिकों के समग्र विकास की आधारशिला है। अतः सभी नागरिक सक्रिय सहयोग देकर इस महत्वपूर्ण अभियान को सफल बनाएं।

जनगणना कार्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर एन्यूमरेटर श्रीमती श्वेता का सम्मान

नगर निगम खंडवा द्वारा संचालित जनगणना कार्य के अंतर्गत ज़ोन 2 के ब्लॉक 1 में एचएलबी मैपिंग का दायित्व निभा रहीं एन्यूमरेटर श्रीमती श्वेता महोदय द्वारा सराहनीय कार्य किया गया है। उन्होंने अब तक 120 सेंसस हाउस सहित 90 मकानों का फील्ड विजिट एवं सफलतापूर्वक मैपिंग कार्य पूर्ण किया है। उनकी इस उल्लेखनीय प्रगति पर निगम सभागृह में मुख्य जनगणना अधिकारी श्रीमती प्रियंका राजावत द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जनगणना कार्य में तेजी एवं गुणवत्ता के साथ लक्ष्य पूर्ण करने वाले अन्य एन्यूमरेटरों को भी प्रोत्साहित करने हेतु सम्मानित किए जाने की बात कही गई। मुख्य जनगणना अधिकारी ने सभी संबंधित कर्मचारियों से निर्धारित समयसीमा में लक्ष्य पूर्ण करने हेतु प्रतिबद्धता एवं सक्रियता के साथ कार्य करने का आह्वान किया। नगर निगम द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

संगठन में मैं नहीं हम की राजनीति चलेगीः हरीश चौधरी

पार्टी में अनुशासनहीनता किसी हालात में बर्दास्त नहीं की जावेगी, होगी कड़ी कार्यवाहीः हरीश चौधरी

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

जिला कांग्रेस प्रभारी शुक्रवार को प्रथम बार खण्डवा दौरे पर पहुंचे। खण्डवा आगमन पर उन्होंने सर्वप्रथम दादाजी दरबार पहुंचकर दर्शन कर मत्था टेका।वहा इसे जूनी इंदौर लाइन पर ब्लॉक अध्यक्ष विशाल जैन,इमरान गौरी मित्रमंडल ने स्वागत किया, इसके पश्चात वे गांधी भवन पहुंचे, जहां दिनभर बैठकों का दौर चलता रहा। समन्वय समिति की बैठक को संबोधित करते हुए हरीश चौधरी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि अब खण्डवा के प्रत्याशी का निर्णय दिल्ली या भोपाल से नहीं होगा, बल्कि इसका निर्णय खण्डवा में ही होगा। उन्होंने कहा कि जो कार्यकर्ता पार्टी के लिए मेहनत करेगा, समय देगा और संगठन को मजबूत करेगा, उसी के नाम पर प्रत्याशी चयन को लेकर विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह सब संगठन सृजन की प्रक्रिया के तहत तय किया गया है।समन्वय समिति की बैठक में संगठन सृजन और भविष्य की रूपरेखा तय की गई। बैठक में श्री चौधरी ने कहा कि पार्टी के कार्यक्रमों में शामिल होने वाले कार्यकर्ताओं का डेटा कनेक्ट सेंटर में संग्रहित किया जा रहा है और जिम्मेदारियां भी उन्हीं कार्यकर्ताओं को दी जाएंगी जो सक्रिय रूप से संगठन के लिए कार्य करेंगे। हरीश चौधरी ने दो टूक शब्दों में कहा कि कांग्रेस पार्टी में अब ÷मैं÷ की राजनीति नहीं चलेगी, बल्कि ÷हम÷ की राजनीति को बढ़ावा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को समन्वय बनाकर कार्य करना होगा। उन्होंने जानकारी दी कि आगामी एक सप्ताह के भीतर अनुशासन समिति का गठन किया जाएगा और जो भी अनुशासनहीनता करेगा, उसके खिलाफ पार्टी द्वारा कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस संबंध में स्पष्ट निर्देश मल्लिकार्जुन खड़गे एवं राहुल गांधी जी द्वारा दिए गए हैं। जिला कांग्रेस अध्यक्ष उत्तमपाल सिंह जिला कांग्रेस अध्यक्ष (शहर) प्रतिभा रघुवंशी ने मध्य प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी के प्रथम आगमन पर पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया।

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी से पूर्व मंत्री सचिन यादव द्वारा विशेष रूप से सलीम पटेल एवं लव जोशी का परिचय कराया गया

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रभारी श्रीमान हरीश चौधरी जी के खंडवा आगमन पर सिसोदिया रिज़ॉर्ट पर पहुँच कर समस्त वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने स्वागत अभिनंदन किया... इसी क्रम में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलीम पटेल एवं पूर्व ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष खंडवा लव जोशी एवं इमरान पटेल खंडवा कांग्रेस खेल खिलाड़ी प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष मयंक पराशर ,वामन जादव , समीर खान उपस्थित रहे। हरीश चौधरी जी के साथ इंदौर से साथ पधारें कांग्रेस के पूर्व मंत्री सचिन यादव द्वारा विशेष रूप से सलीम पटेल एवं लव जोशी का परिचय प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी जी से कराया गया। उक्त आशय की जानकारी देते हुए कांग्रेस अल्प संख्यक प्रकोष्ठ के पूर्व सचिव इमरान पटेल ने बताया कि सलीम पटेल एवं लव जोशी द्वारा कांग्रेस प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी को पत्र देकर महत्वपूर्ण माँग की गई है कि कांग्रेस पार्टी में मजबूत करने के लिए कांग्रेस सवर्ण समाज प्रकोष्ठ का भी गठन करने की आवश्यकता है। साथ ही मध्य प्रदेश में मुस्लिम समाज से तालमेल एवं समन्वय बनाने के लिए प्रदेश के प्रभावी मुस्लिम नेताओं की एक समन्वय समिति बनाने से कांग्रेस पार्टी को मजबूती मिल सकती हैं।

रूद्रमठ में हनुमानजी की पुनः प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न

खंडवा। जसवाड़ी रोड स्थित रामनगर के प्राचीन रूद्रमठ में शुक्रवार को धार्मिक आस्था, सनातन संस्कृति और श्रद्धा का भव्य संगम देखने को मिला। यहां भगवान श्री हनुमानजी की पुनः प्राण प्रतिष्ठा विधि-विधान और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुई। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि इस अवसर पर पंडित शैलेंद्र पांडे के साथ अन्य पंडितों की उपस्थिति में सहस्त्रधारा अभिषेक, हवन, पूर्णाहुति, धर्मसभा एवं विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु, संतजन, जनप्रतिनिधि और क्षेत्रीय नागरिक शामिल हुए।अल सुबह से ही रूद्रमठ परिसर भक्तिमय माहौल में डूबा नजर आया। विद्वान आचार्यों द्वारा विधिपूर्वक पूजा-अर्चना और वैदिक अनुष्ठान प्रारंभ किए गए। भगवान श्री हनुमानजी की प्रतिमा का सहस्त्रधारा अभिषेक किया गया और हवन में श्रद्धालुओं ने आहुति देकर क्षेत्र की सुख-समृद्धि, शांति और मंगलकामना की।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा। RNI No. MPHIN/2016/68059